सामाजिक विज्ञान

(इतिहास)

अध्याय-9: राष्ट्रीय आंदोलन का संघटन 1870 के दशक से 1947 तक

SHIVOM CLASSES 8696608541

राष्टवाद का उदय

यहाँ रहने वाले किसी भी वर्ग, रंग, जाति भाषा या जेंडर वाले तमाम लोगों का घर है। यह देश और इसके सारे संसाधन और इसकी सारी व्यवस्था उन सभी के लिए है। जो भारत मे रहते है।

संगठन

1870 और 1880 के दशकों में राजनीतिक संगठनों में यह चेतना और गहरी हो चुकी थी। इनमें से ज्यादातर संगठनों की बागडोर वकील आदि अंग्रेजी शिक्षित पेशेवरों के हाथों में थी। पूना सार्वजनिक सभा, इंडियन एसोसिएशन, मद्रास महाजन सभा, बॉम्बे रेजिडेंसी एसोसिएशन और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस आदि इस तरह के प्रमुख संगठन थे।

संप्रभु :- बाहरी हस्तक्षेप के बिना स्वतंत्र रूप से कदम उठाने की क्षमता।

आमर्स एक्ट :- 1878 में आमर्स एक्ट पारित किया गया जिसके जरिए भारतीयों द्वारा अपने पास हथियार रखने का अधिकार छीन लिया गया।

वर्नाक्यूलर :- उसी साल वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट भी पारित किया गया जिससे सरकार की आलोचना करने वालों को चुप कराया जा सके।

इल्बर्ट बिल :- 1883 में सरकार ने इल्बर्ट बिल लागू करने का प्रयास किया। इसको लेकर काफी काफी हंगामा हुआ। इस विधेयक में प्रावधान किया गया था कि भारतीय न्यायाधीश भी ब्रिटिश या यूरोपीय व्यक्तियों पर मुकदमा चला सकते हैं।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस :- 1885 में देश भर के 72 प्रतिनिधियों ने बम्बई में सभा करके भारतीय कांग्रेस की स्थापना का फैसला लिया।

संगठन के प्रारंभिक नेता – दादाभाई नौरोजी, फिरोजशाह मेहता, डब्ल्यू. सी. बैनर्जी, सुरेंद्रनाथ बैनर्जी, रोमेशचंद्र दत्त, एस. सुब्रमण्यम अय्यर, बदरुद्दीन तैयब जी एवं अन्य प्रायः मुंबई और कोलकाता के ही थे। ब्रिटिश अफ़सर ए.ओ.ह्यूम।

उभरता हुआ भारत :- कांग्रेस ने सरकार और शासन में भारतीयों को ज्यादा जगह दिए जाने के लिए आवाज उठाई। कांग्रेस का आग्रह था। कि विधान परिषदों में भारतीयों को ज्यादा जगह दी

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

जाए, परिषदों को ज्यादा अधिकार दिए जाएँ और सरकार में भारतीयों को ऊँचे पद दिया जाएँ। इस काम के लिए उसने माँग की कि सिविल सेवा के लिए लंदन के साथ-साथ भारत में भी परीक्षा आयोजित की जाए

निरस्त करना

किसी कानून को समाप्त करना, किसी कानून की वैधता अधिकृत रूप से समाप्त कर देना। " स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है " 1890 के दशक तक बहुत सारे लोग कांग्रेस के राजनीतिक तौर-तरीकों पर सवाल खड़ा करने लगे थे।

परिवर्तनवादी उद्देश्य

बंगाल, पंजाब और महाराष्ट्र में बिपिनचंद्र पाल, बाल गंगाधार तिलक और लाल लाजपत राय जैसे नेता ज्यादा परिवर्तनवादी उद्देश्य और पद्धतियों के अनुरूप काम करने लगे थे।

तिलक :- लोगों बको स्वराज के लिए लड़ना चाहिए। तिलक ने नारा दिया – " स्वतंत्रता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मै इसे लेकर रहूँगा।

बंगाल विभाजन

1905 में विभाजन कर्जन ने बंगाल का विभाजन कर दिया। उस वक्त बंगाल ब्रिटिश भारत का सबसे बड़ा प्रान्त था। अंग्रेजो का कहना था की प्रशासकीय सुविधा को ध्यान रखते हुए बंगाल का बँटवारा करना जरुरी था। पूर्वी बंगाल को अलग करने के पीछे अंग्रेजो का मुख्य उद्देश्य ये रहा होगा की बंगाली राजनेताओ के प्रभाव पर अंकुश लगाया जाए और बंगाली जनता को बाँट दिया जाए। बंगाल के विभाजन से से देश भर में गुस्से की लहर फैल गई मध्यमार्गी और आमूल परिवर्तनवादी,कांग्रेस के सभी धड़ो ने इसका विरोध किया।

विशाल जनसभाओं का आयोजन किया गया और जुलूस निकले गए। जनप्रतिरोध के नए नए रास्ते ढूँढे गए इससे जो संघर्ष उपजा उसे स्वदेशी आंदोलन के नाम से जाना जाता है आंध्र के डेल्टा इलाको में इसे वन्देमातरम आंदोलन के नाम से जाना जाता था। स्वदेशी आंदोलन ने ब्रिटिश शासन का विरोध किया और सवयं सहायता स्वदेशी उद्द्मो,राष्ट्रीय शिक्षा और भारतीय भाषा के उपयोग को

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

बढ़ावा दिया। 1906 में मुस्लिमो ने ऑल इण्डिया मुस्लिम लीग का गठन किया 1907 में कांग्रेस टूट गई। **क्रांतिकारी हिंसा** -समाज में आमूल बदलाव लाने के लिए हिंसा का उपयोग करना।

परिषद् – प्रशासकीय,सलाहकारी या प्रातिनिधिक दायित्वों को विभने वाली मनोनीत या निर्वाचित संस्था।

जनराष्ट्रवाद का उदय

किसान, आदिवासी, विद्यार्थी और महिलाएँ बडी संख्या में इस आंदोलन से जुड़ते गए। कई बार औद्योगिक मजदूरों ने भी आंदोलन में योगदान दिया। बीस के दशक से कुछ खास व्यावसायिक समूह भी कांग्रेस को सक्रिय समर्थन देने लगे थे।

महात्मा गांधी का आगमन

महात्मा गांधी एक राजनेता के रूप में सामने आए। गाँधीजी 46 वर्ष की उम्र में 1915 में दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटे थे। वे वहाँ पर नस्लभेदी पाबंदियों के खिलाफ अहिंसक आंदोलन चला रहे थे और अंतराष्ट्रीय स्तर पर उनकी अच्छी मान्यता थी लोग उनका आदर करते थे।

- **1915** में महात्मा गांधी भारत लौटे।
- **1916** में बिहार के चंपारण इलाके का दौरा किया।
- **1917** में गुजरात के खेड़ा जिले के किसानों की मदद के लिए सत्याग्रह किया।
- **1918** में अहमदाबाद में सूती कपड़ा कारखानों के मजदूरों की हड़ताल का सफलतापूर्वक नेतृत्व किया।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

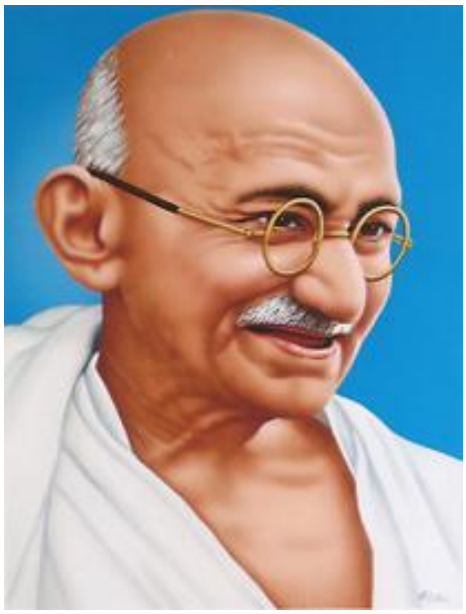

रॉलट एक्ट

यह क़ानून अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता जैसे मूलभूत अधिकारों पर अंकुश लगाने और पुलिस को और ज्यादा अधिकार देने के लिए लागू किया गया था।

- भारी विरोध के बावजूद इस कानून को इम्पीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल ने बहुत जल्दबाजी में पारित कर दिया था।
  ऐसे अन्यायपूर्ण कानूनों के खिलाफ अहिंसक ढंग से नगरिक अवज्ञा चाहते थे।
  इस कानून को " शैतान की करतूत " और निरुकुशवादी बताया।

मार्शल लॉ

ब्रिटिश सरकार द्वारा बनाया गया एक ऐसा कानून था जिसमें किसी भी व्यक्ति को किसी भी समय बिना पुलिस व न्यायालय की इजाजत के गोली का निशाना बनाया जा सकता था।

जलियाँवाला बाग हत्याकांड

अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर के पास का एक छोटा सा बगीचा है जहाँ 13 अप्रैल 1919 को ब्रिगेडियर जनरल रेजिनाल्ड एडवर्ड डायर के नेतृत्व में अंग्रेजी फौज ने गोलियां चला के निहत्थे, शान्त बूढ़ों, महिलाओं और बच्चों सहित सैकड़ों लोगों को मार डाला था

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

नाइटहुड :- ब्रिटिश राजा/रानी की तरफ से किसी व्यक्ति की अप्रतिम व्यक्तिगत सफलताओं या जनसेवा के लिए दी जाने वाली उपाधि।

सत्याग्रह आंदोलन :- सत्याग्रह का शाब्दिक अर्थ सत्य के लिए आग्रह करना होता है।

खिलाफत आंदोलन 1920

अंग्रेजों ने तुर्की के सुल्तान (खलीफ) ऑटोमन सम्राट पर बहुत सख्त संधि थोप दी थी। मोहम्मद अली और शौकत अली ने इसका नेतृत्व किया।

पंजाब में हुए अत्याचारों (जलियांवाला बाग हत्याकांड) और अत्याचार के विरुद्ध अभियान चलाएँ। गाँधी जी ने समर्थन किया।

असहयोग आंदोलन

1921-22 के दौरान असहयोग आंदोलन को और गति मिली। सरकारी पुलिस, अदालतों, विधायी परिषदों, स्कूलों और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार कर दिया। और अंग्रेज़ो द्वारा दी गई उपाधियों को वापस लौटा दिया। विदेशी कपड़ो की होली जलाई।

घेरेबंदी :- प्रर्दशन या विरोध का ऐसा स्वरूप जिसमें किसी दुकान, फैक्ट्री या दफ़्तर के भीतर जाने रास्ता रोक लेते थे।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

महंत :- सिख गुरुद्वारों के धार्मिक कर्ता-धर्ता।

गैर-कानूनी बेदखली :- पटाईदारों को उनके पट्टे से जबरन और गैर- कानूनी ढंग से निकाल देना।

1922-1929 की घटनाएँ

चौरी-चौरा :- 1922 में कुछ लोगों की गुस्साई भीड़ ने गोरखपुर के चौरी-चौरा के पुलिस थाने में आग लगा दी थी. इसमें 23 पुलिस वालों की मौत हो गई थी. 1919 गवर्नमेंट ऑफ़ इंडिया एक्ट के तहत गठित की गई प्रांतीय परिषदों के चुनाव में हिस्सा लेना चाहते थे। उनको लगता था कि परिषदों में रहते हुए ब्रिटिश नीतियों को प्रभावित करना चाहिए।

संगठन :- हिंदुओ के संगठन स्वयंसेवक संघ 1925 (आर एस एस) की स्थापना की।

क्रांतिकारी राष्ट्रवादी :- भगत सिंह भी सक्रिय थे। सुभाषचंद्र बोस युवा नेता ज्यादा उग्र जनांदोलन में सक्रिय थे। 26 जनवरी 1930 को पूरे देश में " स्वतंत्रता दिवस " मनाया गया।

साइमन वापस जाओ :- 1928 में जब साइमन कमीशन भारत पहुँचा तो उसका स्वागत ' साइमन वापस जाओ ' (साइमन कमीशन गो बैक) के नारों से किया गया।

दांडी मार्च

1930 में गांधीजी ने ऐलान किया कि वह नमक कानून तोड़ने के लिए यात्रा निकलेंगे। उस समय नमक के उत्पादन और बिक्री पर सरकार का एकाधिकार होता था। नमक पर टैक्स वसूलना पाप है क्योंकि यह हमारे भोजन का एक बुनियादी हिस्सा होता है। नमक सत्याग्रह ने स्वतंत्रता को व्यापक चाह को लोगों बाकी एक खास शिकायत सभी से जोड़ दिया था और इस तरह अमीरों और गरीबों के बीच मतभेद पैदा नही होने दिया।

गांधीजी साबरमती से 240 किलोमीटर दुर स्थित दांडी तक पैदल चलकर गए। वहाँ समुद्र का पानी उबालकर नमक बनाना शुरू कर दिया। यह कानून का उल्लघन था।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

गोलमेज सम्मेलन

1931 में गांधी जी लदंन गए। यह वार्ता बीच में ही टूट गई और उन्हें निराश वापस लौटना पड़ा।

प्रथम गोलमेज सम्मेलन 22 नवंबर,1930 से 13 जनवरी 1931 तक लंदन में आयोजित किया गया।

दूसरे गोलमेज सम्मेलन के अधिवेशन के दौरान अक्टूबर,1931 के चुनावों के बाद इंग्लैण्ड में अनुदार दल का मंत्रिमंडल बना। इस सम्मेलन में कांग्रेस ने भाग लिया था जिसमें कांग्रेस की ओर से नेतृत्व महात्मा गांधी ने किया था

तृतीय गोलमेज सम्मेलन 17 नवंबर,1932 से 24 दिसंबर 1932 तक चला, कांग्रेस ने सम्मेलन का बहिष्कार किया।

1935 के गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट में प्रांतीय स्वायत्तता का प्रावधान किया गया। सरकार ने ऐलान किया की 1937 में प्रांतीय विधायिकाओं के लिए चुनाव कराए जाएंगे।

भारत छोड़ो 1942

गांधी जी ने भारतीय जनता से आह्वान किया कि वे " करो या मरो " के सिद्धांत पर चलते हुए अंग्रेज़ो के विरुद्ध अहिंसक ढंग से संघर्ष करें।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

मुस्लिम लीग

मुस्लिम लीग ने देश के पश्चिमीमोतर (वर्तमान पाकिस्तान) तथा पूर्वी क्षेत्रों (वर्तमान बांग्लादेश) के लिए स्वतंत्र राज्यों की माँग की।

" सामान्य " निर्वाचन क्षेत्र

ऐसे निर्वाचन क्षेत्र जहाँ किसी धार्मिक तथा अन्य सम्प्रदाय के लिए कोई आरक्षण नहीं था।

पाकिस्तान 14 अगस्त 1947 को स्वतंत्र हुआ

भारत 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्र हुआ

बंगलादेश 26 मार्च 1971 को स्वतंत्र हुआ।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

NCERT SOLUTIONS

प्रश्न (पृष्ठ संख्या 127)

प्रश्न 1 1870 और 1880 के दशकों में लोग ब्रिटिश शासन से क्यों असंतुष्ट थे ?

उत्तर – 1878 में आर्म्स एक्ट पारित किया गया जिसके जरिए भारतीयों द्वारा अपने पास हथियार रखने का अधिकार छीन लिया गया। उसी साल प्रेस एक्ट भी पारित किया गया जिससे सरकार की आलोचना करने वालों को चुप कराया जा सके। इस कानून में प्रावधान था कि अगर किसी अखबार में कोई आपत्तिजनक चीज छपती है तो सरकार उसकी प्रिंटिंग प्रेस सहित सारी सम्पत्ति को जब्त कर सकती है। 1883 में सरकार ने इल्बर्ट बिल लागू करने का प्रयास किया। इसको लेकर काफी हंगामा हुआ। इस विधेयक में प्रावधान किया गया था कि भारतीय न्यायाधीश भी ब्रिटिश या यूरोपीय व्यक्तियों पर मुकदमे चला सकते हैं ताकि भारत में काम करने वाले अंग्रेज और भारतीय न्यायाधीशों के बीच समानता स्थापित की जा सके। जब अंग्रेजों के विरोध की वजह से सरकार ने यह विधेयक वापस ले लिया तो भारतीयों ने इस बात का काफी विरोध किया। इस घटना से भारत में अंग्रेजों के असली रवैये का पता चलता था।

प्रश्न 2 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस किन लोगों के पक्ष में बोल रही थी ?

उत्तर – कांग्रेस ने सरकार और शासन में भारतीयों को और ज्यादा जगह दिए जाने के लिए आवाज उठाई। कांग्रेस का आग्रह था कि विधान परिषदों में भारतीयों को ज्यादा जगह दी जाए, परिषदों को ज्यादा अधिकार दिए जाए और जिन प्रांतों में परिषद नहीं हैं वहाँ उनका गठन किया जाए। कांग्रेस चाहती थी कि सरकार में भारतीयों को भी ऊँचे पद दिए जाएं। इस काम के लिए उसने माँग की कि सिविल सेवा के लिए लंदन के साथ – साथ भारत में भी परीक्षा आयोजित की जाए।

प्रश्न 3 पहले विश्व युद्ध से भारत पर कौन से आर्थिक असर पड़े ?

उत्तर – पहले विश्व युद्ध ने भारत की आर्थिक और राजनीतिक स्थिति बदल दी थी। इस युद्ध की वजह से ब्रिटिश भारत सरकार के रक्षा व्यय में भा इजाफा हुआ था। इस खर्चे को निकालने के लिए सरकार ने निजी आय और व्यावसायिक मुनाफे पर कर बढ़ा दिया था। सैनिक व्यय में इजाफे तथा युद्धक आपूर्ति की वजह से ज़रूरी कीमतों की चीजों में भारी उछाल आया और आम लोगों की जिंदगी मुश्किल होती गई। दूसरी ओर व्यावसायिक समूह युद्ध से बेहिसाब मुनाफा कमा रहे थे।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

इस युद्ध में औद्योगिक वस्तुओं (जूट के बोरे, कपड़े, पटरियाँ) की माँग बढ़ा दी और अन्य देशों से भारत आने वाले आयात में कमी ला दी थी। इस तरह, युद्ध के दौरान भारतीय उद्योगों का विस्तार हुआ और भारतीय व्यावसायिक समूह विकास के लिए और अधिक अवसरों की माँग करने लगे।

प्रश्न 4 1940 के मुस्लिम लीग के प्रस्ताव में क्या मांग की गई थी ?

उत्तर – 1940 में मुस्लिम लीग ने देश के पश्चिमोत्तर तथा पूर्वी क्षेत्रों में मुसलमानों के लिए स्वतंत्र राज्यों " की माँग करते हुए एक प्रस्ताव पारित किया। इस प्रस्ताव में विभाजन या पाकिस्तान का जिक्र नहीं था।

प्रश्न 5 मध्यमार्गी कौन थे ? वे ब्रिटिश शासन के खिलाफ किस तरह का संघर्ष करना चाहते थे ?

उत्तर – 1885 से 1905 तक भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सभी नेता नरम विचारों के थे। इसलिए उनको मध्यमार्गी भी कहा जाता था। वे ब्रिटिश शासन के खिलाफ निम्न तरह से संघर्ष करना चाहते थे :-

मध्यमार्गी नेता जनता को ब्रिटिश शासन के अन्यायपूर्ण चरित्र से अवगत कराना चाहते थे। उन्होंने अखबार निकाले, लेख लिखे और यह साबित करने का प्रयास किया कि ब्रिटिश शासन देश को आर्थिक तबाही की ओर ले जा रहा है। उन्होंने अपने भाषणों में ब्रिटिश शासन की निंदा की और जनमत निर्माण के लिए देश के विभिन्न भागों में अपने प्रतिनिधि भेजे। लेकिन मध्यमार्गियों को ये भी लगता था कि अंग्रेज स्वतंत्रता व न्याय के आदर्शों का सम्मान करते हैं इसलिए वे भारतीयों की न्यायसंगत माँगों को स्वीकार कर लेंगे। लिहाजा, कांग्रेस का मानना था कि सरकार को भारतीयों की भावना से अवगत कराया जाना चाहिए।

प्रश्न 6 कांग्रेस में आमूल परिवर्तनवादी की राजनीति मध्यमार्गी की राजनीति से किस तरह भिन्न थी ?

उत्तर – बंगाल, पंजाब और महाराष्ट्र के बिपिनचंद्र पाल, बाल गंगाधर तिलक और लाला लाजपत राय जैसे नेता ज्यादा आमूल परिवर्तनवादी उद्देश्य और पद्धतियों के अनुरूप काम करने लगे थे। उन्होंने " निवेदन की राजनीति" के लिए नरमपंथियों की आलोचना की और आत्मनिर्भरता तथा रचनात्मक कामों के महत्व पर जोर दिया। उनका कहना था कि लोगों को सरकार के "नेक" इरादों

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

पर नहीं बल्कि अपनी ताकत पर भरोसा करना चाहिए। लोगों को स्वराज के लिए लड़ना चाहिए। तिलक ने नारा दिया "स्वतंत्रता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा।"

प्रश्न 7 चर्चा करें कि भारत के विभिन्न भागों में असहयोग आंदोलन ने किस-किस तरह के रूप ग्रहण किए ? लोग गांधीजी के बारे में क्या समझते थे ?

उत्तर – महात्मा गांधी ने 1920 में असहयोग आंदोलन आरंभ किया। 1921-22 के दौरान असहयोग आंदोलन को और गति मिली। हजारों विद्यार्थियों ने सरकारी स्कूल – कॉलेज छोड़ दिए। मोतीलाल नेहरू सी. आर. दास, सी राजगोपालाचारी और आसफ़ अली जैसे बहुत सारे वकीलों ने वकालत छोड़ दी। अंग्रेजों द्वारा दी गई उपाधियों को वापस लौटा दिया गया और विधान मंडलों का बहिष्कार किया गया। जगह -जगह लोगों ने विदेशी कपड़ों की होली जलाई। 1920 से 1922 के बीच विदेशी कपड़ों के आयात में भारी गिरावट आ गई। परंतु यह तो आने वाले तूफान की सिर्फ एक झलक थी। देश के ज्यादातर हिस्से एक भारी विद्रोह के मुहाने पर खड़े थे।

भारत के विभिन्न भागों में असहयोग आंदोलन :- कई जगहों पर लोगों ने ब्रिटिश शासन का अहिंसक विरोध किया। लेकिन कई स्थानों पर विभिन्न वर्गों और समूहों ने गांधीजी के आह्वान के अपने हिसाब से अर्थ निकाले और इस तरह के रास्ते अपनाए जो गांधीजी के विचारों से मेल नहीं खाते थे। सभी जगह लोगों ने अपने आंदोलनों को स्थानीय मुद्दों के साथ जोड़कर आगे बढ़ाया। खेड़ा , गुजरात में पाटीदार किसानों ने अंग्रेजों द्वारा थोप दिए गए भारी खिलाफ अहिंसक अभियान चलाया। तटीय आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु के भीतरी भागों में शराब की दुकानों की घेरेबंदी की गई। आंध्र प्रदेश के गुंटूर जिले में आदिवासी और गरीब किसानों ने बहुत सारे "वन सत्याग्रह" किए। इन सत्याग्रहों में कई बार वे चरायी शुल्क अदा किए बिना भी अपने जानवरों को जंगल छोड़ देते थे। उनका विरोध इसलिए था क्योंकि औपनिवेशिक सरकार ने वन संसाधनों पर उनके अधिकारों को बहुत सीमित कर दिया था। उन्हें यकीन था कि गांधीजी उन पर लगे कर कम करा देंगे और वन कानूनों को खत्म करा देंगे बहुत सारे वन गाँवों में किसानों ने स्वराज का ऐलान कर दिया क्योंकि उन्हें उम्मीद थी कि गांधी राज जल्दी ही स्थापित होने वाला है। सिंध (मौजूदा पाकिस्तान) में मुस्लिम व्यापारी और किसान ख़िलाफ़त के आह्वान पर बहुत उत्साहित थे। बंगाल में भी खिलाफत असहयोग के गठबंधन ने जबरदस्त साम्प्रदायिक एकता को जन्म दिया और राष्ट्रीय आंदोलन को नई ताकत प्रदान की। पंजाब में सिखों के अकाली आंदोलन ने अंग्रेजों की सहायता से गुरुद्वारों में जमे बैठे भ्रष्ट महंतों को हटाने के लिए आंदोलन चलाया। यह आंदोलन असहयोग आंदोलन से

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

काफी घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ दिखाई देता था। असम में " गांधी महाराज की जय " के नारे लगाते हुए चाय बागान मजदूरों ने अपनी तनख्वाह में इजाफे की माँग शुरू कर दी उन्होंने अंग्रेजी स्वामित्व वाले बागानों की नौकरी छोड़ दी। उनका कहना था कि गांधीजी भी यही चाहते हैं। उस दौर के बहुत सारे असमिया वैष्णव गीतों में कृष्ण की जगह " गांधी राज " का यशगान किया जाने लगा था।

गांधीजी को समझना :- इन उदाहरणों के आधार पर हम देख सकते हैं कि कई जगह के लोग गांधीजी को एक तरह का मसीहा, एक ऐसा व्यक्ति मानने लगे थे जो उन्हें मुसीबतों और गरीबी से छुटकारा दिला सकता है। गांधीजी वर्गीय टकरावों की बजाय वर्गीय एकता के समर्थक थे। परंतु किसानों को लगता था कि गांधीजी जमींदारों के खिलाफ उनके संघर्ष में मदद देंगे। खेतिहर मजदूरों को यकीन था कि गांधीजी उन्हें जमीन दिला देंगे। कई बार आम लोगों ने खुद अपनी उपलब्धियों के लिए भी गांधीजी को श्रेय दिया। उदाहरण के लिए , एक शक्तिशाली आंदोलन के बाद संयुक्त प्राप्त (वर्तमान उत्तर प्रदेश) स्थित प्रतापगढ़ के किसानों ने पट्टेदारों की गैर कानूनी बेदखली को रुकवाने में सफलता पा ली थी परंतु उन्हें लगता था कि यह सफलता उन्हें गांधीजी की वजह से मिली है। कई बार गांधीजी का नाम लेकर आदिवासियों और किसानों ने ऐसी कार्रवाइयाँ भी की जो गांधीवादी आदर्शों के अनुरूप नहीं थीं।

SHIVOM CLASSES 8696608541

प्रश्न 8 गांधीजी को समझना :- इन उदाहरणों के आधार पर हम देख सकते हैं कि कई जगह के लोग गांधीजी को एक तरह का मसीहा, एक ऐसा व्यक्ति मानने लगे थे जो उन्हें मुसीबतों और गरीबी से छुटकारा दिला सकता है। गांधीजी वर्गीय टकरावों की बजाय वर्गीय एकता के समर्थक थे। परंतु किसानों को लगता था कि गांधीजी जमींदारों के खिलाफ उनके संघर्ष में मदद देंगे। खेतिहर मजदूरों को यकीन था कि गांधीजी उन्हें जमीन दिला देंगे। कई बार आम लोगों ने खुद अपनी उपलब्धियों के लिए भी गांधीजी को श्रेय दिया। उदाहरण के लिए , एक शक्तिशाली आंदोलन के बाद संयुक्त प्राप्त (वर्तमान उत्तर प्रदेश) स्थित प्रतापगढ़ के किसानों ने पट्टेदारों की गैर कानूनी बेदखली को रुकवाने में सफलता पा ली थी परंतु उन्हें लगता था कि यह सफलता उन्हें गांधीजी की वजह से मिली है। कई बार गांधीजी का नाम लेकर आदिवासियों और किसानों ने ऐसी कार्रवाइयाँ भी की जो गांधीवादी आदर्शों के अनुरूप नहीं थीं।

उत्तर – 1930 में गांधीजी ने ऐलान किया कि वह नमक कानून तोड़ने के लिए यात्रा निकालेंगे। उस समय नमक के उत्पादन और बिक्री पर सरकार का एकाधिकार होता था। महात्मा गांधी और

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

अन्य राष्ट्रवादियों का कहना था कि नमक पर टैक्स वसूलना पाप है क्योंकि यह हमारे भोजन का एक बुनियादी हिस्सा होता है। नमक सत्याग्रह ने स्वतंत्रता की व्यापक चाह को लोगों की एक खास शिकायत से जोड़ दिया था और इस तरह अमीरों और गरीबों के बीच मतभेद पैदा नहीं होने दिया। गांधीजी और उनके अनुयायी साबरमती से 240 किलोमीटर दूर स्थित दांडी तट पैदल चलकर गए और वहाँ उन्होंने तट पर बिखरा नमक इकट्ठा करते हुए नमक कानून का सार्वजनिक रूप से उल्लंघन किया। उन्होंने पानी उबालकर भी नमक बनाया। इस आंदोलन में किसानों, आदिवासियों और महिलाओं ने बड़ी संख्या में हिस्सा लिया। नमक के मुद्दे पर एक व्यावसायिक संध ने पर्चा प्रकाशित किया। इस तरह से गांधीजी ने नमक कानून को तोड़ने का फैसला लिया।

प्रश्न 9 1937-47 को उन घटनाओं पर चर्चा करें जिनके फलस्वरूप पाकिस्तान का जन्म हुआ ?

उत्तर –

1. **1937 के चुनाव :–** 1937 के प्रांतीय चुनावों ने मुस्लिम लीग को इस बात का विश्वास दिला दिया था कि देश में मुसलमान अल्पसंख्यक हैं और किसी भी लोकतांत्रिक संरचना में उन्हें सदा गौण भूमिका निभानी पड़ेगी। उनको यह भी भय था कि संभव है कि मुसलमानों को प्रतिनिधित्व ही न मिल पाए। 1937 में मुस्लिम लीग संयुक्त प्रांत कांग्रेस के साथ मिलकर सरकार बनाना चाहती थी, परंतु कांग्रेस ने इस प्रस्ताव को नहीं माना जिससे कांग्रेस तथा लीग के बीच दूरी बढ़ गई।
2. **लीग के जनाधार का विस्तार :–** तीस के दशक में कांग्रेस मुस्लिम जनता को अपने साथ जोड़े रखने में असफल दिखाई दी। इस बात ने लीग को अपना सामाजिक जनाधार फैलाने में सहायता दी। चालीस के दशक के आरंभिक वर्षों जब कांग्रेस के अधिकतर नेता जेल में थे। उस समय लीग ने अपना प्रभाव बढ़ाने के लिए तेजी से प्रयास किए।
3. **कांग्रेस तथा लीग के बीच वार्ता की असफलता :–** 1945 में द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त होने के बाद अंग्रेज ने भारत की स्वतंत्रता के लिए कांग्रेस और लीग से बातचीत शुरू कर दी, परंतु यह वार्ता असफल रही क्योंकि लीग का कहना था कि भारतीय मुसलमानों का एकमात्र प्रतिनिधि उसी को माना जाए। कांग्रेस इस दावे को मंजूर नहीं कर सकती थी क्योंकि अभी भी बहुत से मुसलमान उसके साथ थे।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

4. **1946 के प्रांतीय चुनाव :–** 1946 में दोबारा प्रांतीय चुनाव हुए। "सामान्य" निर्वाचन क्षेत्रों में तो कांग्रेस का प्रदर्शन अच्छा रहा। परंतु मुसलमानों के लिए आरक्षित सीटों पर मुस्लिम लीग को शानदार सफलता मिली।
5. **कैबिनेट मिशन का आगमन :–** मार्च 1946 में ब्रिटिश सरकार ने लीग की पाकिस्तान की माँग का अध्ययन करने वे भारत की स्वतंत्रता के लिए एक सही राजनीतिक व्यवस्था सुझाने के लिए तीन सदस्यीय परिसंघ भारत भेजा। इस परिसंघ ने सुझाव दिया कि भारत अविभाजित रहे। मुस्लिम बहुल क्षेत्रों को कुछ स्वायत्तता देकर भारत को एक ढीले – ढाले महासंघ के रूप में संगठित किया जाए। कांग्रेस और मुस्लिम लीग, दोनों ही इस प्रस्ताव के कुछ प्रावधानों पर सहमत नहीं थे। इन परिस्थितियों में देश का विभाजन अवश्यंभावी हो गया।
6. **प्रत्यक्ष कार्रवाई दिवस और भारत का विभाजन :-** कैबिनेट मिशन की इस विफलता के बाद मुस्लिम लीग ने अपनी माँगें मनवाने के लिए 16 अगस्त, 1946 को प्रत्यक्ष कार्रवाई दिवस " मनाने का आह्वान किया। इस दिन कलकत्ता में दंगे भड़क उठे जो कई दिन तक चलते रहे। इन दंगों में हजारों लोग मारे गए। मार्च 1947 तक उत्तर के विभिन्न भागों में भी हिंसा फैल गई जिसमें लाखों लोगों की जानें गईं। अंततः भारत का विभाजन कर दिया। इसके परिणामस्वरूप करोड़ों लोगों को अपने घर – बार छोड़कर भागना पड़ा। अपने मूल स्थानों को छोड़ कर लोग शरणार्थी बनकर रह गए। इस तरह ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता का यह आनंद विभाजन की पीड़ा और हिंसा के साथ हमारे सामने आया।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)